॥ ओ३म् ॥
वेद प्रचार, विश्व शान्ति, राष्ट्रोत्थान एवं सम्पूर्ण क्रान्ति के लिये समर्पित पाक्षिक पत्र

आर्य नीति

कृण्वन्तो विश्वमार्यम

वर्ष : 20 अंक : 5 10 मार्च 2020 मूल्य एक प्रति : 3 रुपये डाक पंजियन संख्या : Jaipur City/264/2018-20 वार्षिक मूल्य : 100 रुपये

हो योग क्षेमकारी स्वाधीनता हमारी

दिल्ली में भारत के संविधान की रक्षा करने वालों ने आईबी कांस्टेबल अंकित को 400 बार मारे चाकू

जयपुर। महर्षि दयानन्द ने भारतवर्ष को राष्ट्रीय प्रार्थना दी कि हो योग क्षेमकारी स्वाधीनता हमारी और आधार राष्ट्र की हो नारी सुभग सदा ही। योग क्षेमकारी स्वाधीनता के लिए महर्षि के आह्वान पर हजारों नवयुवकों ने अपने प्राणों की आहुति दी जिसमें ठाकुर केसरीसिंह बारहठ, पं. रामप्रसाद बिस्मिल, स्वामी श्रद्धानन्द, लाला लाजपत राय, शहीद-ए-आजम भगतसिंह प्रमुख थे। अपने प्राणों की आहुति देने वाले इन नवयुवकों को क्या मालूम था कि आजादी के 73 वर्ष के बाद भी धर्म के नाम पर वीभत्स हत्याएं होंगी।

शाहीन बाग में चल रहे आंदोलन के बारे में सैकड़ों बुद्धिजीवी शोर मचाते रहे कि देश टूट रहा है, देश का विभाजन हो जाएगा, धर्म के नाम पर नागरिकता संशोधन कानून क्यों बनाया गया और शाहीन बाग में जो भी नागरिकता संशोधन कानून का विरोध कर रहे हैं वो देश के संविधान की रक्षा के लिए कर रहे हैं क्योंकि यह कानून संविधान विरोधी है।

आज सारा राष्ट्र इन तथाकथित बुद्धिजीवियों से पूछ रहा है कि क्या यही संविधान बचाने का तरीका है कि आई.बी. कांस्टेबल अंकित को 400 बार चाकू मारे गए। क्या इससे संविधान बचेगा? क्या यह कृत्य संविधान के अनुकूल है?

पूर्वोत्तर दिल्ली में दंगों के दौरान आईबी (इंटेलिजेंस ब्यूरो) कांस्टेबल अंकित शर्मा की उपद्रवियों ने नृशंसता से हत्या की थी। पोस्टमार्टम रिपोर्ट के अनुसार अंकित को 400 से ज्यादा बार चाकू मारे गए। उनके शरीर के किसी भी हिस्से को छोड़ा नहीं गया। उनकी आंतें फट कर बाहर निकल गई थीं।

रिपोर्ट के अनुसार उसे 6 लोगों ने चार से छह घंटों तक चाकू मारे होंगे। पोस्टमार्टम करने वाले डॉक्टरों का कहना था कि उन्होंने अपने जीवन में ऐसा क्षतविक्षत शव नहीं देखा। उपद्रवियों ने हत्या के बाद शव को नाले में फेंक दिया था। उधर, अंकित की हत्या के आरोपी पार्षद ताहिर हुसैन के घर को दिल्ली फॉरेंसिक साइंस लेबोरेटरी और क्राइम ब्रांच की एसआइटी ने सबूत जुटाए। उन्होंने ताहिर के घर से खून के नमूने, कपड़े के टुकड़े, अंगुलियों के निशान आदि चीजें सबूत के तौर पर जमा किए। मौके से हथियार जैसी कुछ चीजें भी मिली हैं, जो कि संभवत चार लोगों के द्वारा हत्या में इस्तेमाल की गई होंगी।

नाले में उतरी फॉरेंसिक टीम, रस्सा मिला- फॉरेंसिक टीम ताहिर के घर के पास के नाले में भी उतरी। नाले के अंदर से एक बड़ा रस्सा मिला। बताया जा रहा है कि इससे अंकित के शव को खींचकर पानी में डाला गया। इसके अलावा दीवार से कुछ सैंपल, ईंट के दो टुकड़े भी बतौर सबूत जमा किए। ताहिर की करावल नगर स्थित निर्माणाधीन इमारत से पेट्रोल बम, पत्थर व बोतालें के साथ गुलेल भी मिले थे। इसके बाद उन पर केस दर्ज किया गया है।

दिल्ली दंगे : पुलिसवाले पर पिस्टल तानने वाला शाहरूख गिरफ्तार, परिजन अभी फरार

उत्तर-पूर्वी दिल्ली में दंगों के वक्त पुलिसवाले पर पिस्टल तानने वाले मोहम्मद शाहरुख को गिरफ्तार कर लिया गया है। 24 फरवरी को हिंसा के दौरान लाल टी-शर्ट पहने हुए उसकी तस्वीर काफी चर्चित रही थी। एसीपी (क्राइम ब्रांच) एके सिंघला ने बताया, शाहरुख कॉलेज का ड्रॉपआउट है। उत्तर प्रदेश के शामली से पकड़े गए शाहरुख को कोर्ट ने चार दिन के लिए पुलिस हिरासत में भेज दिया है। उसके पिता साबिर अली नारकोटिक्स और नकली करंसी मामले में शामिल रह चुके हैं।

पुलिस शाहरुख के फरार परिजन को भी तलाश रही है। शुरुआती पूछताछ में शाहरुख ने खुलासा किया उस दिन वह अकेला ही प्रदेश में पहुंचा था, जहां तैश में आकर फायरिंग की थी। उस पर हत्या की कोशिश और आर्म्स एक्ट के तहत केस दर्ज किया था। इसका कोई पुराना आपराधिक रिकॉर्ड नहीं मिला है।

फायरिंग के बाद कनाट प्लेस की पार्किंग में सो गया था- हिंसा के दौरान शाहरुख फायरिंग कर दहशत फैलाने के बाद भागकर दिल्ली के कनाट प्लेस में एक पार्किंग में पहुंचा था। पुलिस से बचने के लिए वह कई घंटे तक कार के भीतर ही सोता रहा। जब उसे विश्वास हो गया कि पुलिस अब दंगों में पूरी तरह फंस चुकी होगी, तो वो पंजाब चला गया। वहां से वह यूपी के बरेली में छिप गया। जब उसे पुलिस की भनक लगी तो शामली पहुंच गया। पुलिस ने बताया कि शाहरुख के पास से घटना वाले दिन इस्तेमाल की गई पिस्टल बरामद नहीं हो सकी। उसे टिकटॉक का शौक है। एक म्यूजिक एलबम भी रिलीज करवा चुका है।

शाहीन बाग में धारा 144, भारी पुलिस तैनात, हिंसा की अफवाह पर 7 मेट्रो स्टेशन बंद, 4 शव मिले

दिल्ली में हिंसा खत्म हो चुकी है, लेकिन अफवाहों का दौर चरम पर है। रविवार शाम 7 बजे कई इलाकों में हिंसा की अफवाहें फैलीं। कहा गया कि शाहीनबाग में भदगड़ का माहौल है। पुलिस पहुंची, पर हालात सामान्य थे। तिलनगर, नांगलोई, सूरजमल स्टेडियम, बदरपुर, तुगलकाबाद, उत्तम नगर पश्चिम व नवादा मेट्रो स्टेशन बंद किए गए। रात 8.15 बजे पुलिस ने ट्वीट किया- 'सब जगह शांति है।' इसके बाद मेट्रो स्टेशन खोले गए। शाहीन बाग में जारी प्रदर्शन के पास दो गुटों में टकराव रोकने के लिए धारा 144 लगाई गई। हिन्दू सेना ने 1 मार्च को सड़क खाली करवाने का आह्वान किया था। पुलिस के हस्तक्षेप के बाद हिन्दू सेना ने प्रदर्शन वापस ले लिया। दंगा प्रभावित उत्तरपूर्वी दिल्ली में भारी संख्या में पुलिस बल तैनात है। आर्ट ऑफ लिविंग के संस्थापक श्री श्री रवि शंकर ने भी हिंसा प्रभावित क्षेत्रों का दौरा किया।

अभी तक जांच में सामने आया है कि 80 घर, 50 दुकानें, 200 वाहन, 2 स्कूल, 6 गोदाम, 4 फैक्ट्री और 4 धार्मिक स्थलों को आग के हवाले किया गया। सरकार हिंसा में हुए नुकसान का आकलन करने में लगी है। दंगे के मामले में अब तक 254 केस दर्ज हो चुके हैं। कुल 903 लोग हिरासत में लिए गए हैं।

उत्तरपूर्वी दिल्ली में तीन नालों से 4 शव मिले। अगर इनकी मौत दंगे में हुई होगी तो मौतों का आंकड़ा 46 पहुंच जाएगा। फिलहाल यह स्पष्ट नहीं है।

जेहाद के नाम पर नागरिकता संशोधन कानून का विरोध हो रहा है और इस आग को सारे देश में फैलाया जा रहा है। इस भयंकर स्थिति में भी आर्य समाज मौन बैठा रहा और उसने योग क्षेमकारी स्वाधीनता के लिए संघर्ष करना तो दूर रहा अपना विचार भी व्यक्त नहीं किया।

अमेरिका-तालिबान समझौते से उपजे नए सवाल

संदर्भ... इस्लामिक अमीरात-ए-अफगानिस्तान को मान्यता से गनी के सुर तल्ख, भारत को सतर्कता की जरूरत

-डॉ. वेदप्रताप वैदिक
भारतीय विदेश नीति परिषद के अध्यक्ष

कतर की राजधानी दोहा में तालिबान के साथ अमेरिका ने जो समझौता किया है, यदि वह सफल हो जाए तो उसे अंतरराष्ट्रीय राजनीति का सुखद आश्चर्य माना जाएगा। खुद अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प ने कहा है कि यदि तालिबान ने इस समझौते की शर्तों का पालन नहीं किया तो अफगानिस्तान में इतनी अमेरिकी फौजें भेज दी जाएंगी कि जितने पहले कभी नहीं भेजी गई हैं। ट्रम्प को पता नहीं है कि पिछले 200 साल में ब्रिटिश साम्राज्य और सोवियत रूस अफगानिस्तान में कई बार अपने घुटने तुड़वाकर सबक सीख चुके हैं। फिर भी उनके प्रतिनिधि जलमई खलीलजाद को बधाई देनी होगी कि वे अमेरिका के जानी दुश्मन अफगान तालिबान को समझौते की मेज तक खींच लाए।

यह समझौता अभी सिर्फ अमेरिका और तालिबान के बीच हुआ है, अफगान सरकार और तालिबान के बीच नहीं। अफगान सरकार और तालिबान के बीच वार्ता शुरू होगी 10 मार्च को, लेकिन भोजन के पहले ग्रास में ही मक्खी पड़ गई है। अफगान राष्ट्रपति अशरफ गनी ने समझौते की इस शर्त को मानने से इनकार कर दिया है कि यदि तालिबान एक हजार कैदियों को रिहा करेगा तो 10 मार्च तक काबुल सरकार पाँच हजार तालिबान कैदियों को रिहा कर देगी। उन्होंने पूछा कि अमेरिका ने यह वादा उनसे पूछे बिना कैसे कर दिया? पहले तालिबान से बात होगी, फिर कैदियों की रिहाई के बारे में सोचा जाएगा। तालिबान के प्रवक्ता ने गनी की बात को खारिज कर दिया और कहा कि रिहाई पहले होगी। इस बीच, खोस्त में तालिबान ने हमला बोलकर तीन लोगों की हत्या भी कर दी है।

इसका अर्थ क्या हुआ? क्या यह नहीं कि अमेरिका ने तालिबान की जो भी शर्तें मानी हैं और जिन मुद्दों पर उन्हें सहमति दी है, वे सब उसने काबुल सरकार को नहीं बताई हैं? जिन्हें तालिबान के नाम से सारी दुनिया जानती है, यह समझौता उनके नाम से नहीं हुआ है। यह हुआ है अमेरिका और 'इस्लामिक अमीरात-ए-अफगानिस्तान' के बीच। यानी अमेरिका ने तालिबान सरकार को अनौपचारिक मान्यता दे दी है, जबकि तालिबान राष्ट्रपति अशरफ गनी और प्रधानमंत्री डॉ. अब्दुल्ला की सरकार को सरकार ही नहीं मानते। उसे वे 'अमेरिका की कठपुतली' कहकर बुलाते हैं। समझौते में कहा गया है कि इस्लामिक अमीरात वादा करती है कि वह अमेरिका के विरोधियों को 'वीजा, पासपोर्ट, यात्रा-पत्र और आश्रय' प्रदान नहीं करेगी। जो भी अगली इस्लामी सरकार बनेगी, अमेरिका के साथ उसके संबंध अच्छे रहेंगे। क्या इसका स्पष्ट संकेत यह नहीं है कि वर्तमान काबुल सरकार के दिन लद गए हैं? वैसे भी इस्लामी सरकार के नेता मुल्ला अब्दुल गनी बरादर ने समझौते पर दस्तखत करने के बाद दोहा में कई देशों के राजदूतों से मुलाकातें शुरू कर दी हैं।

काबुल सरकार वैसे भी अधर में लटकी है। 28 सितम्बर, 2019 में हुए राष्ट्रपति चुनाव का फैसला अब पांच महीने बाद फरवरी 2020 में आया। इसे गनी के प्रतिद्वंद्वी अब्दुल्ला ने मानने से इनकार कर दिया है और कहा है कि असली राष्ट्रपति वे ही हैं और वे ही सरकार बनाएंगे। अभी तक नए राष्ट्रपति ने शपथ भी नहीं ली है। अमेरिकी दबाव में इनके बीच कोई समझौता हो भी जाए तो क्या वे अमेरिकियों के कहने पर तालिबान को सत्ता सौंप देंगे? इस समय अफगानिस्तान के आधे से ज्यादा जिलों में तालिबान का वर्चस्व है। जहां तक अफगानिस्तान की फौज और पुलिस का संबंध है, उसकी संख्या दो लाख के ऊपर है। उसमें ताजिक, उजबेक, तुर्कमान, किरगीज और हजारा लोगों की संख्या पठानों के मुकाबले कम है और तालिबान मूलत: पठान संगठन है। जाहिर है कि अफगान फौज भी रातोंरात अपना पैंतरा बदल सकती है। अमेरिकी फौजों की वापसी के 14 महीनों के दौरान क्या ये पठान चुप बैठे रहेंगे? अगले 135 दिन में अमेरिका के 14,000 और नाटो के 12,500 सैनिकों में से कितनों की वापसी होती है? होती भी है या नहीं? अमेरिका ने वादा किया है कि यदि तालिबान शांति बनाए रखेंगे और अल-कायदा जैसे गिरोहों को नाकाम करेंगे तो वह अगले 135 दिन में अपने 8000 जवानों को वापस बुला लेगा।

लगभग इसी तरह का समझौता अमेरिकी राष्ट्रपति रिचर्ड निक्सन के समय 1973 में वियतनाम को लेकर हुआ था। पांच लाख अमेरिकी जवान दक्षिण वियतनाम से वापस बुला लिए गए, लेकिन दो साल में ही दक्षिण वियतनाम पर उत्तर वियतनाम का अधिकार हो गया। क्या अफगानिस्तान में यही नहीं होने वाला है? जो भी होना है, हो जाए, अमेरिका को तो अफगानिस्तान से अपना पिंड छुड़ाना है। ट्रम्प को चुनाव जीतना है। उन्हें यह बताना है कि जो ओबामा नहीं कर सके, वह मैंने कर दिखाया है।

प्रश्न यह है कि इस मामले में भारत की नीति क्या हो? यदि अफगानिस्तान में शांति रहती है तो भारत को कई आर्थिक और सामरिक लाभ होंगे। आतंकवाद का खतरा बहुत ज्यादा घटेगा। भारत के विदेश सचिव समझौते के एक दिन पहले काबुल गए, यह अच्छा हुआ, लेकिन दोहा में हमारे विदेश मंत्री की गैरहाजिरी मुझे खटकती रही। भारत ने अफगानिस्तान में अब तक लगभग 25 हजार करोड़ रुपए लगाए हैं और सैकड़ों निर्माण-कार्य किए हैं। भारत ने जरंज-दिलाराम सड़क बनाकर अफगानिस्तान को फारस की खाड़ी और मध्य एशिया के राष्ट्रों से जोड़ दिया है।

भारत ने आंख मींचकर इस समझौते का स्वगात किया है। लेकिन, उसने तालिबान के साथ भी कुछ तार जोड़े हैं या नहीं? पिछले 25-30 साल में तालिबान और मुजाहिदीन नेताओं से मेरा सीधा संपर्क काबुल और पेशावर के अलावा कई देशों में हुआ है। वे पाकिस्तान परस्त हैं, यह उनकी मजबूरी है, लेकिन वे भारत-विरोधी नहीं हैं। उन्होंने भारत से मान्यता प्राप्त करने की गुपचुप कोशिश कई बार की है। उन्होंने 1999 में हमारे अपहृत जहाज को कंधार से छुड़ाने में भी हमारी मदद की थी। वे स्वायत्त स्वभाव के हैं। वे किसी की गुलामी नहीं कर सकते। भारत सरकार भविष्य के बारे में सतर्क रहे, यह बहुत जरूरी है।

आर्य समाज एकमात्र ऐसी धार्मिक संस्था है जिसने सारे विश्व को शांति पाठ दिया। आर्य समाज में प्रात: सांय संध्या और यज्ञ की समाप्ति शांति पाठ से होती है।

द्यौ: शान्तिरन्तरिक्ष शान्ति: पृथिवी

महर्षि विश्व शांति चाहते थे और उन्होंने वेद का संदेश दिया-

संगच्छध्वं संवदध्वं सं वो मनांसि जानताम्।
देवा भागं यथा पूर्वे सं जानाना उपासते॥
प्रेम से मिलकर चलें बोलें सभी ज्ञानी बनें।
पूर्वजों की भाँति हम कर्त्तव्य के मानी बनें॥

महर्षि ने विश्व शांति के लिए वेदों का विशाल समुद्र दिया था परंतु हमने उस समुद्र को बकरी का खुर बनाकर रख दिया जैसे कि विश्व शांति आर्य समाज का विषय ही नहीं है। अफगानिस्तान का नाम अपगण स्थान था इसे ब्राह्मणसाही भी कहते थे। अफगानिस्तान में मुसलमान ही आपस में युद्धरत्त हैं। इसलिए महर्षि ने कहा था 'मतमतान्तर के परस्पर विरुद्ध झगड़े हैं उनको मैं प्रसन्न नहीं करता, क्योंकि इन्हीं मतवालों ने अपने मतों का प्रचार कर मनुष्यों को सता के परस्पर शत्रु बना दिये हैं। इस बात को काट सर्वसत्य का प्रचार कर सबको एक ही मत में करा। द्वेष छुड़ा, परस्पर में दृढ़ प्रीतियुक्त कराके सबसे सबको सुख लाभ पहुंचाने के लिए मेरा प्रयत्न और अभिप्राय है।' आर्य समाज के यशस्वी पुत्र और प्रसिद्ध पत्रकार श्री वेदप्रताप वैदिक ने अफगानिस्तान में चल रहे संघर्ष को समाप्त करने के लिए अपने विचार दिए हैं जिस पर आर्य समाज के अनुयायियों को गंभीरतापूर्वक विचार करना चाहिए।

अस्थिहीन आर्यसमाजी स्वामी श्रद्धानंद से प्रेरणा लें

अनेक आर्यसमाजी अस्थिविहीन हैं। उनके मकानों द्वार पर गणेश जी की मूर्ति लगी दिखाई देती है। उनके विवाह निमंत्रण पत्रों में भी गणेश जी का चित्र होता है। आर्य समाज के एक पुरोहित की पुत्री के विवाह के निमंत्रण पत्र में राधाकृष्ण का चित्र छपा हुआ था। इन लोगों से जब पूछा जाता है कि ऐसा क्यों किया तो उनका उत्तर होता है कि क्या करें हमारे लड़के नहीं मानते। घर में शांति बनाए रखने के लिए हमें मजबूर होकर ऐसा करना पड़ता है। स्पष्ट है कि आर्य समाज की दीवारें टूट रही हैं और भूलुंठित हो रही हैं। इस प्रकार के आर्य समाजियों को स्वामी श्रद्धानन्द के मुद्रित प्रकरण से प्रेरणा लेनी चाहिए कि हम आर्य समाज के मंतव्यों के विरुद्ध कोई भी कार्य नहीं करेंगे।

-सत्यव्रत सामवेदी

पहली आत्मिक हलचल

'न हि सत्यात्परो धर्मः।'

पिता जी के अपेक्षाकृत नीरोग होने पर भी मैं तलवन ग्राम में ही ठहर गया और उनकी सेवा करने लगा। इतने में ज्येष्ठ की निर्जला एकादशी का दिन आ पहुँचा। स्नान-पूजा से निवृत्त होकर पिता जी अपनी बैठक से घर में आये। यहाँ झज्झर पानी से भरकर और उसके ढक्कन पर खरबूजा, मीठा और दक्षिणा धरकर सारे घर को संकल्प पढ़ना था। निर्जला एकादशी के दिन जितना जल हमारे हिन्दूभाई पीते हैं उसे देखकर इस अनोखे नामकरण-संस्कार पर हँसी आती है। व्रत तो यह कि एक दिन-रात निराहार, यहाँ तक कि बिना जल के निर्वाह करेंगे, और व्रतियों का आचरण यह कि दिनभर खरबूजे खाकर शरबत पीते-पीते हैजे के शिकार बन जाएँ। कैसी अद्भुत लीला है!

निर्जला एकादशी का दिन मेरी धार्मिक परीक्षा का पहला अवसर था। पिताजी मेरे साथ अपने सब पुत्रों से अधिक प्रेम करते थे। उनको अपने मन्तव्य में पूर्ण श्रद्धा थी और उसके वह प्रचारक भी थे। जहाँ वह अपने इष्टदेव की भक्ति में कभी आलस्य नहीं करते थे वहाँ पंजाब के बेसुरे हिन्दुओं को मुसलमानों की कब्रों की पूजा से रोकने में भी तत्पर रहते थे तलवन ग्राम में सैकड़ों को उन्होंने कब्रपरस्ती से रोककर ठाकुर जी के मंदिर का सेवक बना दिया था। पिता जी ने संकल्प के समय मुझे बुलाने को आदमी भेजा। मैं जानता था कि आज परीक्षा का दिन है। इससे बचने के लिए अपनी बैठक में पुस्तक खोलकर पढ़ने बैठ गया था। मैंने समझा था कि आँखें बन्द कर लेने से बला टल जाएगी, किन्तु पिताजी का दूत सिर पर आ सवार हुआ। मैं उठकर पिताजी के पास जाने के लिए बाधित हुआ। उस समय का दृश्य मैं कभी नहीं भूल सकता। घर में दोमंजिले का एक लम्बा दालान है। उसमें सामने बड़े आसन पर पिताजी बैठे हुए हैं और उनके सामने एक लम्बी पंक्ति में झज्झरें सजी रक्खी हैं। सबके सामने मेरे भाई-भतीजे बैठे हैं, जो संकल्प कर चुके हैं और केवल एक झज्झर के सामने का आसन मेरे लिए खाली पड़ा है। मैं सामने पहुँचकर खड़ा हो गया और नीचे लिखी बातचीत हुई।

पिताजी- ''आओ मुंशीराम! तुम कहाँ थे? हमने तुम्हारी बड़ी प्रतीक्षा करके सबसे संकल्प पढ़ा दिया है। तुम भी संकल्प पढ़ लो, तब मैं भी संकल्प पढ़कर निवृत्त हो जाऊँगा।''

मैं पिताजी से स्पष्ट कहने में डरता था इसलिए पहला उत्तर यह दिया- ''पिताजी! संकल्प तो दिल के साथ सम्बन्ध रखता है, जब आपने संकल्प किया है तो आपका दान है, जिसे चाहें दें। इसलिए मैंने आना आवश्यक नहीं समझा था।''

पिताजी को मेरे आर्य बनने की खबर मिल चुकी थी। पहले तो उन्हें कुछ प्रसन्नता-सी हुई थी, क्योंकि उनको केवल इतना ही पता लगा था कि मैं नास्तिक से आस्तिक बन गया हूँ, किन्तु जब जालन्धर से मेरे तथा देवराज जी के व्याख्यानों का समाचार उन्हें मिला तो उन्होंने देवराज जी के पिता राय शालिग्राम जी को लिखा था कि हम दोनों को अपने देवी-देवताओं की निन्दा करने से रोकना चाहिए। बीमारी में वह इन सब बातों को भूल गए थे किन्तु आज सब पुराने संस्कार जाग उठे। पिताजी ने मेरे उत्तर में कहा-

''क्या मेरा धन तुम्हारा नहीं? फिर उसमें से दान देने का तुम्हें अधिकार क्यों नहीं? और क्या दिल का संकल्प बाहर निकालना पाप है? तुम ठीक कारण क्यों नहीं बतलाते?'' इतना कहकर पिता जी ने सीधा वार किया- ''क्या तुम एकादशी और ब्राह्मण-पूजा पर विश्वास नहीं रखते? क्या बात है?''

इस स्पष्ट प्रश्न पर निकलने का कोई मार्ग न दीख पड़ा। मैंने कहा- ''ब्राह्मणत्व पर तो मुझे पूर्ण विश्वास है, किन्तु जिनको आप दान देना चाहते हैं वे मेरी दृष्टि में ब्राह्मण नहीं हैं, और सकादशी के दिन में भी मैं कुछ विशेषता नहीं समझता।'' मेरा इतना कहना था कि पिताजी आश्चर्ययुक्त होकर मेरी ओर देखने लगे। मैंने आँखें नीची कर लीं। एक क्षण के पश्चात् पिताजी ने दीर्घ श्वास लिया और कहा- ''मैंने तो बड़ी आशा लेकर तुम्हें बड़ी सरकारी नौकरी से हटाकर वकालत की ओर डाला था। मुझे तुम से बड़ी सेवा की आशा थी, क्या उस सबका फल मुझे यही मिलना था? अच्छा जाओ।'' मैं चुपचाप नीचे उतर आया और सारे दिन शोक-सागर में डूबा रहा।

दो-तीन दिन तो मैं पिताजी के पास जाने से घबराता रहा और वह मुझे बुलाने से टालते रहे, किन्तु उनके हृदय में मेरे लिए गहरा प्रेम था। एक दिन मुझे स्वयं बुलाकर किसी अपने अंग्रेज मित्र को पत्र लिखवाया। शनैः-शनैः निर्जला एकादशी के दिन का दृश्य मेरी दृष्टि से ओझल हो गया। छुट्टियाँ शायद भाद्रपद के तीसरे सप्ताह तक थीं। मैंने सारी छुट्टियाँ पिताजी की चिकित्सा कराने और उनकी सेवा करने में व्यतीत कीं। इन्हीं दिनों मैंने 'सत्यार्थप्रकाश', 'आर्याभिविनय' और 'पंचमहायज्ञविधि' की पूरी आवृत्ति की और जब लाहौर चलने लगा उस समय तक 'ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका' का आधा पाठ कर चुका था। इस पढ़ने के काम में मुझे एक योग्य शिष्य मिल गया। पंजाब में संस्कृतज्ञों का वैसे ही उस समय अभाव था और फिर ग्राम में तो संस्कृत का काम ही क्या! किन्तु तलवन के देहाती मदरसे का द्वितीयाध्यापक (आठ रुपये मासिक पाने वाला) काशीराम संस्कृत जानता था और इसलिए पिताजी को उनकी रुचि के अनुकूल धर्मग्रन्थ सुनाया करता था। वही काशीराम मेरे पठन-पाठन में भी सम्मिलित हुआ और जब मैं तलवन से लाहौर लौट गया तो पीछे उसी ने पिताजी की श्रद्धा मेरे मन्तव्यों के ऊपर जमवायी।

कानून की पुस्तकें मैं प्रायः याद कर चुका था। सत्यार्थप्रकाश आदि सारा दिन पढ़ते रहना कठिन था और आर्यसमाज में प्रवेश करते ही अंग्रेजी उपन्यासों (नावेल्स) से भी मुझे घृणा हो चुकी थी। तलवन में कोई ऐसे सुशिक्षित सभ्य पुरुष भी न थे। जिनसे बातचीत में दिन काटता। इससे व्यसन के प्रलोभन में फिर से फँसा। काशी से अंतिम बार विदा होने से पहले मैंने बड़े-बड़े शतरंजियों से शतरंज खेलना सीखा था। तलवन में पहुँचकर देखा कि मेरे परिवार से मुसलमान उस्तादों का घराना सारा-का-सारा प्रसिद्ध शरंजबाज है। वहाँ उस खेल में और भी शिक्षा मिली। फिर जालंधर में भाई बालकराम जी को शतरंज का बड़ा शौक था, उनके साथ खूब मुकाबिला होता रहा। सारांश यह कि आर्यसमाज में प्रवेश करते ही जहाँ मांसभक्षण को त्याग दिया, जहाँ उपन्यासों को उठाकर जुदा रख दिया, वहाँ शतरंज को भी तिलांजलि दे दी थी; किन्तु तलवन में निकम्मा बैठे रहने पर सामने मोहरों को खटाखट देखकर मुझसे न रहा गया और फिर शतरंज के खेल में दिन के पाँच-छह घंटे व्यर्थ गँवाने लग गया। इसके अतिरिक्त मुझे सितार का शौक था और अपने वृद्ध उस्ताद पीरबख्श कलावन्त से सितार पर कुछ भजनों का अभ्यास करता रहा।

दूसरी आत्मिक परीक्षा

'नास्ति सत्यसमं तपः।'

इस प्रकार, ज्यों-त्यों करके मैंने दो मास से अधिक काट दिये और लाहौर के लिए प्रस्थान का दिन निकट आ गया। नागौरी बैलों से जुती हुई मझोली तैयार हुई, उसके नीचे और पीछे असबाब रखवा और बंधवाकर मैं पिताजी की सेवा में प्रणाम करने के लिए उपस्थित हुआ। अपने बनवाये मंदिर की बड़ी डेवढ़ी के ऊपर उनके रहने के कमरे बने हुए थे। पिताजी की तकिया लगाये बड़े कमरे में बैठे थे। उनका निजी सेवक भीमा खड़ा था। मैंने पहुँचकर पैरों पर सिर रखकर प्रणाम किया। पिताजी ने सिर पर हाथ रखकर आशीर्वाददिया। मैं चलने के लिए उठने लगा। आज्ञा हुई कि अभी बैठ जाओ, फिर भीमा भृत्य को इशारा हुआ। उसने एक थाली में मिठाई और उसके ऊपर एक अठन्नी रखकर थाली मेरे सामने की। तब पिताजी ने कहा- ''जाओ पुत्र! ठाकुर जी की मत्था टेककर विदा होवो। मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीरामचन्द्र भगवान् के पालक हनुमान जी तुम्हारी रक्षा करें।'' मैं इतना सुनते ही सुन्न हो गया। काटो तो खून नहीं। कुछ उत्तर न बन आता था, चुपचाप बैठा था। पिताजी ने मेरे मौन का कारण कुछ और ही समझा। मैं अपने निज के आराम के लिए जहाँ उन दिनों भी अधिक व्यय नहीं करता था वहाँ उदार भी बहुत था। जहाँ दूसरा आदमी दो आने पारितोषिक देकर संतुष्ट होता वहाँ मुझे आठ आने से कम देने में लज्जा आती। पिताजी स्वयं बड़े अच्छे प्रबन्धकर्त्ता थे और उनके गृह का सारा व्यय बड़े नियम से चलता था। पिताजी ने समझा कि मैं आठ आने की भेंट देवता के लिए कम समझता हूँ। भीमा को कहा गया कि अठन्नी उठाकर एक रुपया रख दे। उसने ऐसा ही किया। तब पिताजी ने कहा- ''लो पुत्र! अब ठीक हो गया। देर होती है, ठाकुर जी को मत्था टेककर सवार हो जाओ।'' तब मुझे अपने ऊपर बड़ा जब्र करके बोलना ही पड़ा। मैंने कहा- ''पिताजी! यह बात नहीं है, किन्तु मैं अपने माने हुए सिद्धांतों के विरुद्ध कोई कार्य कैसे करता हूँ? हाँ, सांसारिक व्यवहार में जो आप आज्ञा दें, उसके पालन के लिए हाजिर हूँ।'' इतना कहकर मैं चुप हो गया। पिताजी के मुख पर कई प्रकार के उतराव-चढ़ाव आये और उन्होंने क्रोध-भरे शब्दों में कहा- ''क्या तुम हमारे ठाकुर जी को धातु-पत्थर समझते हो?'' इस समय मेरे अंदर घोर संग्राम हो रहा था। न जाने कैसे धृष्टता से मैंने कहा- ''परमात्मा से नीचे अपने

(शेष पृष्ठ 5 पर)

हम कौन थे, क्या हो गए

सच्चे लोकतंत्र का निर्माण न सिर्फ स्कूलों से होता है और न ही अस्पतालों और पुलों से। उसके लिए अच्छे मनुष्य बनाने की जरूरत होती है और अच्छा मनुष्य तटस्थ नहीं रहता। वह लोकतांत्रिक मूल्यों के लिए हर कीमत चुकाने को तैयार रहता है।

-: अरुण कमार त्रिपाठी :-

देश का दिल कही जाने वाली दिल्ली अब बहुत बदल गई है। यह वह दिल्ली नहीं लगती, जहां 15 अगस्त को लाल किले से स्वतंत्रता का उद्घोष हाता है और 26 जनवरी को राजपथ पर हमारी लोकतांत्रिक विविधता और राज्य शक्ति की छटा दिखाई जाती है। इसके मौजूदा हालात देखकर 1947 के विभाजन के दिनों की याद ताजा हो जाती है। विडंबना है कि लोग उस इतिहास को भूल चुके हैं जब दंगा शांत करने के लिए महात्मा गांधी ने 13 जनवरी से 18 जनवरी 1948 तक अनशन करके हिंसा की हैवानियत को काबू किया था और 30 जनवरी को नफरत से भरे एक व्यक्ति और विचार का सीने पर सामना करते हुए अपनी जान देकर पूरे उपमहाद्वीप को शांत कर दिया था।

आज इस शहर में बड़े-बड़े भाषणबाज, संवाद के कौशल में प्रवीण, चुनाव जिताने वाले और धमकाने वाले नेता रहते हैं, लेकिन उनमें से किसी के भीतर यह साहस नहीं है कि अशांत इलाके में कदम रखे। दिल्ली के खतरनाक इलाकों में अब अपनी जान हथेली पर रखकर महज सुरक्षा बल के जवान जाते हैं या चैनलों और अखबारों के संवाददाता, लेकिन उनकी भी कार्यशैली अपने संस्थागत और धार्मिक पूर्वाग्रह से ग्रसित है। दिल्ली में बड़े बड़े राजनीतिशास्त्री, समाजशास्त्री, एनजीओ और आंदोलनों के कार्यकर्ता रहते हैं लेकिन वे भी भयभीत हैं और बाहर निकलने का साहस नहीं दिखा रहे हैं। उन क्षेत्रों में न तो उन दलों के नेता जाते हैं जिन्हें हाल के लोकसभा में बड़ी जीत मिली है और न ही वे जिन्हें विधानसभा में बड़ी जीत मिली है। वे सब दूर से आग तापने और आश्वासन देने में यकीन करते हैं।

हिंसा और नफरत की दिशा में हुआ दिल्ली का यह बदलाव न तो दिल्ली के लिए अच्छा है और न ही देश के लिए। यह वो दिल्ली नहीं लगती, जहां देश के हर घर से कोई न कोई अपनी रोजी-रोटी के लिए आता है औश्र जहां हर हाथ को कोई न कोई काम मिल जाया करता था। यह वो दिल्ली भी नहीं लगती, जहां विभाजन और विस्थापन के गहरे जख्म लेकर लाखों लोग आए और यहां की सरकार से सहायता पाकर न सिर्फ अपने पैरों पर खड़े हुए बल्कि मुल्क को ऊंचाइयों पर पहुंचाने में योगदान दिया। यह वो दिल्ली भी नहीं लगती जहां देश के किसी भी कोने से अन्याय से पीड़ित व्यक्ति न्याय की गुहार लेकर आता है और उसे किसी न किसी रूप में इंसाफ मिल ही जाता था। यह वो दिल्ली भी नहीं लगती जहां बड़े से बड़े राजनीतिक बदलाव का आगाज होता था और उसकी लहर पूरे देश में पहुंचती थी। यह दिल्ली अब उन लोगों को डरा रही है जो अपने बड़े-बड़े सपने लेकर यहां आते थे और उसे हासिल कर अपने गांव जिले के नायक बन जाते थे या फिर अपने जिलों और कस्बों की आवाज यहां की सबसे बड़ी पंचायत में बुलंद करते हैं।

पिछले दो-तीन दिनों में उत्तर पूर्वी दिल्ली में नफरत और हिंसा ने तकरीबन दो दर्जन लोगों को जिस तरह दुनिया से विदा किया और सैकड़ों को बेघर और घायल किया, वह इस शहर के माथे पर एक दाग के रूप में उभरा है। दिल्ली निकट अतीत में एक बार तब लहूलुहान हुई थी, जब मंडल आयोग की रपट लागू होने के बाद युवाओं ने आरक्षण विरोधी आंदोलन के दौरान हिंसा की थी। उससे पहले उसकी स्मृति में 1984 के सिख विरोधी दंगों की भयानक घटनाएं थीं। उससे पहले विभाजन की स्मृतियां दिल्ली के जेहन में हैं और मौजूदा हिंसा के बहाने वे बार-बार कौंधती हैं। हाल में दिल्ली विधानसभा के चुनाव जिस माहौल में हुए और सीएए और एनआरसी विरोधी आंदोलन के आसपास जिस रूप में दंगे हुए, वे न सिर्फ दिल्ली के समाज पर सवाल उठाते हैं बल्कि उन तमाम लोकतांत्रिक संस्थाओं पर भी गंभीर प्रश्न करते हैं जो संविधान की समयानुकूल व्याख्या करने और उसे लागू करने के लिए बैठी हैं।

दिल्ली की मौजूदा हिंसा देखकर विभाजन के उस दौर की याद ताजा हो जाती है जब प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू पुरानी दिल्ली की दंगाई भीड़ के आगे अपना डंडा लेकर टूट पड़ते थे। वह समय याद आता है जब किंग्सवे कैंप के शरणार्थी शिविर में एक बुढ़िया ने नेहरू का कॉलर पकड़कर सवाल पूछा था कि नेहरू तूने देश के लिए क्या किया है और नेहरू ने यही कहा था कि अम्मा मैंने इतना तो जरूर किया है कि आप देश के प्रधानमंत्री का कॉलर पकड़ सकती हैं। यह वही नेहरू थे जो उस जुलूस पर भड़क उठे थे जो बिड़ला हाउस में अनशन कर रहे गांधी के लिए नारा लगा रहा था- 'गांधी को मरने दो'। इसी दिल्ली में जब विभाजन का दंगा हुआ तो निहत्थे और लगभग अप्रासांगिक हो चुके गांधी को बंगाल से बुलाने और उनके नैतिक बल का उपयोग करने के लिए पूरी केन्द्र सरकार बेचैन थी। जब गांधी शाहदरा स्टेशन पर पहुंचे तो उन्हें लेने के लिए स्वयं सरदार पटेल खड़े थे और उन्हें सुरक्षा के लिहाज से बिड़ला भवन में ठहराया गया जबकि वे वाल्मीकि बस्ती में ठहरना चाहते थे।

जिन छह मांगों के साथ गांधी ने अपना अनशन करके और अपनी जान देकर आधुनिक दिल्ली का निर्माण किया था और एशिया का शांति संदेश पूरी दुनिया को दिया था, आज दिल्ली उस रास्ते से काफी दूर जा चुकी है। गांधी ने पश्चिम बंगाल से आकर इस दिल्ली में हिन्दू-मुस्लिम एकता की जो मिसाल कायम की थी, उसे वे पाकिस्तान तक ले जाना चाहते थे और उसी के लिए उन्होंने अपने दो साथियों को पाकिस्तान भेजा भी था। गांधी की इस भावना को आज के शाहीन बाग में महिलाओं का धरना व्यक्त कर रहा था जो दस्तावेज और धर्म के पूर्वाग्रह पर आधारित नागरिकता की अवधारणा को चुनौती देते हुए भारतीय उपमहाद्वीप की साझा विरासत को जगा रहा था। यह वही विरासत थी जिसके तहत गांधी पाकिस्तान में बिना वीसा लिए घुसने वाले थे। जिन्ना ने कहा था कि उनसे कहिएगा कि यहां वे हमारी सुरक्षा में रहें क्योंकि अगर उन्हें कुछ हो गया तो हम पाकिस्तान को नहीं बचा पाएंगे।

दिल्ली की मौजूदा हिंसा के लिए सीएए और एनआरसी के समर्थक तो जिम्मेदार है ही, वे लोग भी जिम्मेदार हैं जो लोग शाहीन बाग के आंदोलन को भीम आर्मी और जमाते इस्लामी के रास्ते पर ले जा रहे हैं। निश्चित तौर पर यह समय आंदोलन करने का नहीं, उसे वापस लेकर शांति स्थापित करने का है। लेकिन इस हिंसा के लिए आम आदमी पार्टी की सरकार अपनी उदासीनता के कारण जिम्मेदार है। केजरीवाल के पास अगर कुछ है तो वह है नैतिक बल, जिसके चलते उन्हें जनता ने फिर चुना है, क्योंकि उसके अलावा उनके पास कोई सुरक्षा बल नहीं है। लेकिन दुर्भाग्य की स्थिति यह है कि वे अपने नैतिक बल की शक्ति भूल चुके हैं और उन्हें केन्द्र सरकार के उसी सुरक्षा बल पर यकीन है जो पिछले कुछ वर्षों से निष्पक्ष और निर्भिक व्यवहार नहीं दिखा रहा है।

यह भी हो सकता है कि भविष्य में केजरीवाल के पास न तो नैतिक बल बचे और सुरक्षा बल तो आने से रहा। उन्हें यह सोचना होगा कि सच्चे लोकतंत्र का निर्माण न सिर्फ स्कूलों से होता है और न ही अस्पतालों और पुलों से। उसके लिए अच्छे मनुष्य बनाने की जरूरत होती है और अच्छा मनुष्य तटस्थ नहीं रहता। वह लोकतांत्रिक मूल्यों के लिए साहस के साथ आगे बढ़ता है और हर कीमत चुकाने को तैयार रहता है क्योंकि भ्रष्टाचार सिर्फ अनैतिक तरीके से धन कमा लेना ही नहीं होता। भ्रष्टाचार लोकतांत्रिक मूल्यों की अवहेलना से भी पैदा होता है और जो पार्टियां उन मूल्यों को मिटाने में सहयोग दे रही हैं वे तात्कालिक रूप से भले लोकतंत्र को मार रही है लेकिन दीर्घकालिक रूप से अपनी और अपने समाज की हत्या कर रही है।

अफगानिस्तान में महिलाएं जेलों में घर से अधिक आजादी महसूस करती हैं

-: कियाना हयेरी :-

अफगानिस्तान की जेलों में कैद कम से कम आधी महिलाएं ड्रग का इस्तेमाल करने, घर से भागने, प्रेम संबंधों जैसे तथाकथित नैतिक अपराधों में सजा काट रही हैं। पश्चिमी देशों की सरकारों के दबाव के बावजूद देश में संबंधित कानूनों को बदला नहीं गया है। इन्हें गंभीर अपराध माना जाता है। उत्तर पश्चिम में स्थित हेरात शहर की महिला जेल में 119 कैदी हैं। उनके 32 बच्चे साथ में रह रहे हैं। 20 महिलाओं को पति की हत्या का दोषी पाया गया है। उन्हें बीस साल की सजा दी गई है। कम आयु में उनका विवाह जबरन उनसे बहुत अधिक आयु के पुरुषों से कर दिया गया। ये पुरुष अपराधी, उग्रवादी और ड्रग की लत के शिकार थे। लड़कियों पर जमकर अत्याचार किए गए जाते थे। उनकी मदद करने वाला कोई नहीं था। वे तलाक नहीं ले सकती थीं। लिहाजा, उन्होंने अत्याचारों से बचने के लिए अपने पति की हत्या कर दी।

अफगानिस्तान में रहने वाली ईरानी-कनाडियाई फोटोग्राफर कियाना हयेरी ने 2019 में हेरात महिला जेल का दौरा किया। हयेरी ने सजायाफ्ता महिलाओं से चर्चा में पाया कि इनमें से कई महिलाओं की जिंदगी दहशत के साये में बीत रही थी। शारीरिक यातनाओं और मौखिक प्रताड़ना ने उनके भय को गुस्से में बदल दिया। 20 साल की परीसा से उनका पति अक्सर मारपीट करता था। कई बार तो उन्हें चाकुओं के घाव झेलने पड़े। पति ने धमकी दी कि अगर उसने तलाक मांगा तो वह उनके माता-पिता की हत्या कर देगा। एक दिन परिसा ने पति की राइफल उठाई और उसके सीने में गोली मार दी। कुछ मिनट बाद उसकी मौत हो गई। 39 साल की फातिमा की शादी अपने रिश्तेदार से हो गई। उसके पांच बच्चे हैं। पहला बच्चा 13 वर्ष की उम्र में हो गया था। फातिमा का पति उसके पेट में जब चाहे घूंसे मारता था। एक बार तो गोली तक चला दी थी। एक रात फातिमा ने सोते समय गला घोटकर उसकी हत्या कर दी। परिसा और फातिमा को भी 20-20 साल की सजा हुई है।

पति की हत्या के आरोप में सजा काट रही महिलाएं जेल में अधिक आजादी महसूस करती हैं। वे रमजान जैसे उपवास के समय साथ में खाना खाती हैं। शाम के समय खेलती हैं। बच्चों के साथ समय बिताती हैं। जेल में उन्हें अपने कमरे सजाने की अनुमति है। एक परिषद इसके लिए पैसा देती है। आरोपी महिलाओं का अदालत में बचाव करने वाली वकील नताशा लतीफ कहती हैं, अफगानिस्तान में पुरुषों का महिलाओं पर नियंत्रण सामान्य है। यह मर्दानगी का प्रतीक है।

जापान व जर्मनी में गर्म हवा से सूखे की स्थिति उत्पन्न हुई, हमारे यहां भी बिगड़े हालात

जलवायु परिवर्तन से प्रभावित देशों में भारत 5वें स्थान पर

-: भगवती प्रसाद डोभाल :-

एक सर्वेक्षण के अनुसार अन्य देशों की अपेक्षा भारत में जलवायु परिवर्तन की मार से सर्वाधिक मौतें हुई हैं। इस परिवर्तन से एक वर्ष में 2,081 लोगों की जानें गई हैं। यह तथ्य भी सामने आया है कि मौसम की मार से आर्थिक नुकसान में भारत दूसरे स्थान पर है। इससे 260 अरब रुपए पानी में बह गए। यह नुकसान देश के वार्षिक स्वास्थ्य बजट का चार गुना है। यह आंकड़े पर्यावरण थिंक टैंक जर्मन वाच से सीओपी 25 के सम्मेलन में पेश 2018 की रिपोर्ट में दिए हैं। इसके अनुसार जलवायु परिवर्तन की मार से दुनिया में प्रभावित देशों में भारत पांचवें स्थान पर आ गया है। जलवायु परिवर्तन की सर्वाधिक मार औद्योगिक देश जापान और जर्मनी पर पड़ी। इन देशों में गर्म हवा से सूखे की स्थिति उत्पन्न हुई। दूसरी ओर, फिलीपींस में बड़े तूफान ने कहर ढाया। इससे पहले पोलैंड में जारी की गई 2017 की रिपोर्ट में भारत 14वें नंबर पर था। रिपोर्ट इस बात का खुलासा करती है कि जर्मनी, जापान और भारत सबसे अधिक कार्बन गैसों के उत्सर्जन के कारण ग्लोबल वार्मिंग से प्रभावित हैं। 2018 में सबसे लम्बी अवधि तक गर्म हवाओं की लहरें भारत में चलीं। इसके कारण 100 व्यक्तियों की मौतें भी हुईं और सूखा पड़ने से फसलों का नुकसान और ज्यादा हुआ। पानी की कमी के कारण लोगों को घर छोड़ने को विवश होना पड़ा। रिपोर्ट में कहा गया है कि 2004 से इस तरह के जलवायु परिवर्तन का सिलसिला भारत में चला आ रहा है। इन 15 वर्षों में से से 11 वर्ष सबसे गर्म रहे हैं।

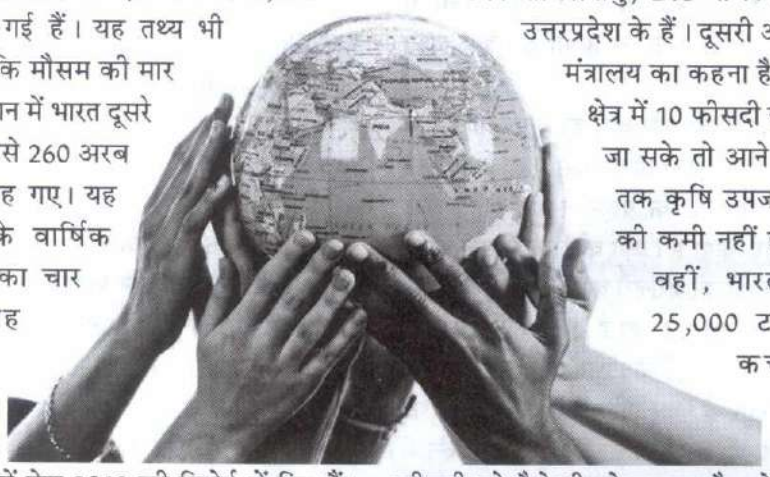

कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय के एक अध्ययन से यह भी पता चला है कि वर्षभर बर्फ से ढंके रहने वाला आर्कटिक सागर भी आने वाले वर्षों में बगैर बर्फ का दिखेगा। ऐसी स्थिति 2044 और 2067 के बीच आ सकती है। मनुष्य के अस्तित्व से अब तक आर्कटिक के बहुत बड़े क्षेत्र में प्रत्येक सर्दी में समुद्र पर बर्फ की तह जम जाती है और गर्मियों में कुछ क्षेत्र से पिघल जाती है, लेकिन कभी ऐसा नहीं हुआ कि पूरा क्षेत्र बर्फविहीन हो गया हो। आज वही क्षेत्र गर्म हो गया है। इस कारण आने वाले समय में आर्कटिक क्षेत्र के बर्फमुक्त होने की आशंका है। कुछ विशेषज्ञ भी कहते हैं कि 2026 के सितम्बर में ऐसा हो सकता है। आर्कटिक क्षेत्र पृथ्वी पर रह रहे प्राणियों के लिए बहुत ही महत्वपूर्ण है। इसकी समुद्री बर्फ पृथ्वी के तापमान को नियंत्रित करती है उसको गर्म होने से बचाती है।

दूसरी तरफ, यह बात भी सामने आई है कि भारत का 22 फीसदी भू-जल सूख गया है या फिर सूखने की कगार पर है। यह भी माना जाता है कि देश के 89 फीसदी उपलब्ध जल को कृषि कार्यों में इस्तेमाल किया जाता है। केन्द्रीय भू-जल बोर्ड के अनुसार 2017 में 6,881 जल इकाइयों में से 1,499 इकाइयों के जल को पूरी तरह से निकाल दिया गया है। इस तरह से जो ब्लॉक जलसंकट में हैं, उनमें से 541 तमिलनाडु, 218 राजस्थान और 139 उत्तरप्रदेश के हैं। दूसरी ओर, जल शक्ति मंत्रालय का कहना है कि यदि कृषि क्षेत्र में 10 फीसदी जल को बचाया जा सके तो आने वाले 50 वर्षों तक कृषि उपज के लिए जल की कमी नहीं होगी।

वहीं, भारत में प्रतिदिन 25,000 टन प्लास्टिक कचरे का ढेर लगता है। इसमें से 40 फीसदी को वैसे ही छोड़ा जाता है, जो वातावरण को प्रदूषित कर रहा है। प्लास्टिक की उपयोगिता को घटाना गंभीर प्रश्न है। यदि पृथ्वी पर जीवन को सतत बनाए रखना है तो उसको गरम होने से बचाने के उपाय शीघ्र करने होंगे। विकसित देशों को कार्बन उत्सर्जन को कम करने के लिए बाध्य करना होगा। अमेरिका अपने आप में क्लाइमेट संधि से छिटक रहा है, यह बहुत बड़ी समस्या है।

पिछले वर्ष दिसम्बर में मेड्रिड के जलवायु परिवर्तन सम्मेलन में क्लाइमेट चेंज परफॉरमेंस इंडेक्स यानी 'सीसीपीआई' के अनुसार ऑस्ट्रेलिया, सऊदी अरब और अमेरिका गैसों के उत्सर्जन को रोकने में फिसड्डी रहे हैं। वैकल्पिक ऊर्जा उत्पादन में भी इनका योगदान कम रहा है। माना जा रहा है कि यह तीन सरकारें विशेष रूप से कोयला और तेल उत्पादक लॉबी के प्रभाव में हैं। विश्व के सर्वाधिक कार्बल उत्सर्जक 57 देशों में से 31 ऐसे देश हैं, जो विश्व में 90 फीसदी कार्बन का उत्सर्जन कर रहे हैं। यूरोपियन यूनियन के आठ देश सबसे अधिक कार्बन का उत्सर्जन कर रहे हैं, जबकि पोलैंड और बुल्गारिया सबसे कम करते हैं। चीन सबसे अधिक कार्बन उत्सर्जन करने वाले देशों में है, लेकिन उसका ध्यान वैकल्पिक ऊर्जा के उत्पादन में भी है। चीन कार्बन उत्सर्जन में 30वें नम्बर पर जबकि ब्रिटेन और भारत क्रमशः 7वें और 9वें नम्बर पर हैं। बीते 2019 में और वर्तमान समय में भी मौसम की अटखेलियां चल ही रही हैं। अधिक वर्षा ने देश के कई राज्यों में कृषि उत्पादन को प्रभावित किया है।

अस्थिहीन आर्यसमाजी...

(पृष्ठ 3 का शेष)

लिए मैं आपको ही समझता हूँ, किन्तु हे पिता! क्या आप चाहते हैं कि आपकी संतान मक्कार हो?'' ये शब्द बड़े ही करुणापूर्ण स्वर में मेरे अंदर से निकले थे। पिताजी की जबान भी कुछ लड़खड़ा गयी- ''कौन अपनी संतान को मक्कार देखना चाहता है?'' मैंने उस समय को जीवन की रक्षा व मृत्यु-प्राप्ति का समय समझा और कहा- ''तब मेरे लिए तो ये मूर्तियाँ इससे बढ़कर कुछ नहीं और यदि मैं इनके आगे भेंट धरकर सिर झुकाऊँगा तो वह मक्कारी होगी।'' कहने को तो मैंने इतना कह डाला किन्तु उस पर पिताजी के हृदयवेधक शब्द सुनकर मुझ में कुछ शक्ति ही नहीं रही। ''हा! मुझे विश्वास नहीं कि मरने पर मुझे कोई पानी देने वाला भी रहेगा। अच्छा भगवान्, जो तेरी इच्छा!'' मैं मानो धरती में गड़ गया, पैर वहीं-के-वहीं रहे। दस मिनट तक न मुझे ही कुछ सुध रही और न पिताजी ही कुछ बोले। फिर उन्होंने धीरे से कहा- ''अच्छा, अब जाओ, देर होगी।'' मैंने चुपचाप प्रणाम किया और नीचे उतरकर मझोली पर सवार हो गया।

मझोली तक पहुँचते-पहुँचते मेरे मन में कई प्रकार के संकल्प-विकल्प उठते रहे। प्रधानतया यही विचार मेरे मन में आता था कि जब मैं पिताजी के धार्मिक विचारों से सहमत नहीं, जब मैं उनकी स्वर्ग-प्राप्ति या मोक्ष का साधन नहीं बन सकता, जिसके लिए उनके मतानुकूल मृतकश्राद्ध तथा तर्पणादि आवश्यक हैं, तब मुझे क्या अधिकार है कि उनके कमाये धन में हिस्सेदार बनूँ? मुझे चलते समय पिताजी ने पचास रुपये खर्च के लिए दिये थे। मैंने वे रुपये एक कागज में बाँधकर अपने एक संबंधी के हवाले किये और कह दिया कि दूसरे दिन सवेरे वह उस धन को मेरे पत्र सहित पिताजी के आगे पेश कर दे। पत्र में केवल इतना लिख दिया कि ''जब मैं आपके मन्तव्य के विरुद्ध मत रखता हूँ तो मुझे कोई अधिकार नहीं कि सुपात्रों के भाग में से कुछ लूँ। जीवन शेष है तो आपके चरणों में अपनी भेंट रखूंगा ही।'' मैं रुपये देकर चल दिया। अभी एक मील भी गाड़ी नहीं गयी थी कि घोड़ा सरपट दौड़ाते हुए वही संबंधी आते देखे। मैंने मझोली खड़ी करा दी। घुड़सवार ने पहुँचते ही रुपयों की पोटली मेरे हवाले की और पिताजी का मौखिक संदेश सुनाया- ''तुम प्रतिज्ञा करके गये हो कि मेरी सांसारिक आज्ञाओं से मुख नहीं मोड़ोगे। यह मेरी सांसारिक आज्ञा है कि यह रुपया ले-जाओ और बराबर व्यय के लिए रुपया मुझसे मँगाते रहो।'' पिताजी के इस संदेश ने मेरे हृदय की डाँवाडोल अवस्था को ठीक करने में बड़ी सहायता दी।

बात यह हुई कि मेरे संबंधी जी ने दूसरे दिन की प्रतीक्षा करने के स्थान में उसी समय रुपयों की पोटली, मेरे पत्र सहित, पिताजी के आगे रख दी जिसका परिणाम ऊपर की घटना हुई। पिताजी से इस प्रकार विदा होकर मैं उसी शाम को जालंधर पहुँचा। वहाँ देवराज जी से ज्ञात हुआ कि मेरी अनुपस्थिति में पण्डित शिवनारायण अग्निहोत्री आये थे जिनके व्याख्यान सरदार विक्रमसिंह आहलूवालिया के स्थान पर हुए, किन्तु वे ठहरे लाला बालकराम जी के पास थे। भाई बालकराम जी ने उससमय उनकी निर्बलताओं को खूब समझा और मुझे कहा कि यद्यपि हमारे यहाँ ठहरकर यह आदमी आर्य समाज के विरुद्ध नहीं बोलता, तो भी यह किसी-न-किसी दिन गुरुडम पर हाथ मारेगा और स्वामी दयानन्द और आर्य समाज के विरुद्ध बोलेगा। भाई बालकराम जी 'आदमी आदमी के अंतर' को खूब पहचानने वाले थे और उनका निदान बहुत-कुछ ठीक बैठता था। इसके अतिरिक्त यह भी ज्ञात हुआ कि मेरी अनुपस्थिति में आलाराम संन्यासी भी जालंधर से व्याख्यान दे गये हैं और उनके व्याख्यानों में सरदार विक्रमसिंह आहलूवालिया आई.सी.एस. भी आया करते थे। मुरलीमल की धर्मशाला वाले आर्य समाज के मकान में एक आदित्यवार की ईश्वर-प्रार्थना और उपदेश का आनन्द उठाकर मैं लाहौर पहुँच गया।

कानून से नहीं, सोच बदलने से ही मिलेगी बराबरी

-: शिव दुबे :-

आर्य समाज ने सर्वप्रथम महिला जागरण और महिला सशक्तिकरण का आंदोलन प्रारंभ किया था। महर्षि ने वैदिक धर्म की स्थापना के लिए जब राष्ट्रव्यापी आंदोलन प्रारंभ किया तो उन्होंने महिला उत्थान पर सबसे अधिक बल दिया था। महर्षि के अनुसार वैदिक काल में महिला का समाज में सर्वोच्च स्थान था। महर्षि ने अपने अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश के द्वितीय समुल्लास का प्रारंभ निम्न प्रकार किया-

मातृमान् पितृमानाचार्यवान् पुरुषो वेद।

वस्तुत: जब तीन उत्तम शिक्षक अर्थात् एक माता, दूसरा पिता और तीसरा आचार्य्य होवे, तभी मनुष्य ज्ञानवान् होताहै। वह कुल धन्य! वह सन्तान बड़ा भागवान्! जिसके माता और पिता धार्मिक, विद्वान हों। जितना माता से सन्तानों को उपदेश और उपकार पहुँचता है, उतना किसी से नहीं। जैसे माता सन्तानों पर प्रेम, उनका हित करना चाहती है, उतना अन्य कोई नहीं करता। इसलिये (मातृमान्) अर्थात् **"प्रशस्ता धार्मिकी विदुषी माता विद्यते यस्य स मातृमान्"**। धन्य! वह माता है कि जो गर्भाधान से लेकर जब तक पूरी विद्या न हो, तब तक सुशीलता का उपदेश करे।

महर्षि दयानन्द ने जब समाज में महिला को सर्वोच्च स्थान देने का आंदोलन चलाया तब हमारे समाज की सोच क्या थी? हिन्दू समाज में यह माना जाता था-

स्त्रीशूद्रोंनाधीयताम्

अर्थात् स्त्री और शूद्रों को नहीं पढ़ाना चाहिए। महर्षि ने इस सोच के विरुद्ध विद्रोह किया और पुत्री पाठशालाएं खोलने की प्रेरणा दी। महर्षि ने तो यहां तक प्रतिपादित किया कि महिलाओं पर महिलाओं का ही शासन होना चाहिए। महिलाएं वैदिक काल में युद्ध में भाग लिया करती थीं और उन्हें सैन्य शिक्षा भी दी जानी चाहिए। प्रारंभ में उनके इस विचार का बहुत विरोध हुआ परंतु उनका यह विचार दावानल की तरह फैलता गया और आज जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में महिलाओं की जो अभूतपूर्व प्रगति देख रहे हैं उसका श्रेय महर्षि दयानन्द को जाता है। महर्षि की प्रेरणा से ही स्वामी श्रद्धानन्द ने सारे पंजाब में पुत्री पाठशालाओं का जाल बिछा दिया और उन्हीं के माध्यम से हिन्दी का प्रचार किया और पंजाब को मद्य-मांस से मुक्त कराया। महर्षि ने संस्कारविधि में विवाह संस्कार में सप्तपदी की व्याख्या करते हुए बताया कि सातवां कदम 'सख्ये सप्तपदी भवो' अर्थात् सातवां कदम यह उपदेश देता है कि पति-पत्नी में सखा भाव होना चाहिए। पर आज भी हम इस लक्ष्य से कितने दूर हैं।

सेना में महिलाओं को कोर कमांडर बनाने का सुप्रीम कोर्ट का ऐतिहासिक फैसला आया। इस फैसले के जरिये रूढ़िवादी सोच पर कोर्ट के प्रहार ने हमें बहुत कुछ सोचने को मजबूर किया है। क्या कोर्ट के फैसले से ही हमारी आधी आबादी को बराबरी का दर्जा मिल जाएगा? यह सवाल इसलिए भी उठ रहा है, क्योंकि बराबरी का दर्जा नारों और वादों की ही बात होकर रह गई है। सेना में भी अधिकार लेने के लिए महिलाओं को 17 वर्ष की लम्बी कानूनी लड़ाई लड़नी पड़ी। फिर आम जीवन में तो सपने जैसा है, क्योंकि हर छोटे-बड़े काम में तो कानूनी फैसले लाए नहीं जा सकते न।

जिस बराबरी के दर्जे की आदर्श बातें हो रही हैं, उनके लिए लम्बा इंतजार ही करना पड़ेगा। जहां पर कानूनी बाध्यता के चलते महिलाओं को मौका दिया भी जा रहा है, वहां केवल औपचारिकता ही नजर आती है। इसको मौजूदा राजनीतिक ढांचे से समझा जा सकता है। पंचायतों में महिलाओं को बराबरी का दर्जा देने का कानून बन गया है। महिलाएं स्थानीय चुनाव जीत भी रही हैं पर बाद में होता क्या है, यह किसी से छिपा नहीं है। पंचायतों और निकायों में महिलाएं पंच और पार्षद तो चुनी जा रही हैं पर उनके साथ चलने लगा है एक शब्द-पीपी।

पीपी यानी पार्षद पति-पंच पति। चुनाव महिलाएं जीतती हैं और राज करते हैं उनके पति। शत-प्रतिशत भले न सही पर ज्यादातर मामलों में हो ऐसा ही रहा है। मतलब साफ है। महिलाओं के प्रति नजरिया बदलने में शायद समय लगेगा। कितना यह तो नहीं पता, लेकिन देश और दुनिया में आदर्शों से सीख लेनी होगी। घर में बचपन से शुरू होती है लाइन- तू लड़की है। अरे वो लड़के वाले हैं। अरे घर तो पुरुष ही चलाते हैं। इसी तरह की बातों ने हमारी सोच को बदलने से रोका है। दुनिया में हमारे देश का नाम रोशन करने वाली बैडमिंटन सुपर स्टार साइन नेहवाल का उदाहरण ही देखिए। जब वे पैदा हुईं, तब उनकी दादी ने एक महीने तक उनका मुंह नहीं देखा था। उन्हें पोते की चाह थी। बात सोच की है। इसलिए उस इलाके में पुरुष प्रधान समाज हावी है। महिलाओं के अनुपात के नजरिये से देखें तो 30वें सीान पर।

दूसरी ओर केरल, जहां महिलाएं, पुरुषों के अनुपात में सबसे अधिक हैं। एक हजार पुरुषों में 10841 वहां शत-प्रतिशत साक्षरता और महिलाओं को काम करने की आजादी है। केरल की महिलाएं न केवल देश में बल्कि विदेश के भी बड़े से बड़े अस्पताल में नर्सिंग का दायित्व निभाते हुए मिल जाती हैं। एक और उदाहरण है, महिला-पुरुष अनुपात में शीर्ष पांच राज्यों में शुमार छत्तीसगढ़ का। तीजन बाई किसी पहचान की मोहताज नहीं। पंडवानी गायिका-पद्मश्री-पद्म विभूषण। पूरे राज्य के लिए गौरव। यही कोई चार साल पुरानी बात है। देश के राष्ट्रपति ने चुनिंदा लोगों को राष्ट्रपति भवन में भोज पर आमंत्रित किया था। उनमें से एक तीजन बाई भी थीं। तीजन बाई ने ऐन वक्त पर राष्ट्रपति का आमंत्रण स्वीकार नहीं किया, क्योंकि तीन बाई को नातिन हुई थी। तीजन से पूछा गया कि आप क्यों नहीं गईं तो उन्होंने कहा था- नातिन घर में आई है। इससे बड़ा अवसर मेरे लिए कोई और नहीं हो सकता।

इस तरह की सोच ही सार्थक परिणाम दे सकती है। और सोच दिखावे से नहीं, मन से निकलती है। मन तैयार होता है बचपन से दी गई शिक्षा से। घर में बताइए। स्कूल में पढ़ाइए। समाज में बताइए। काम से जताइए तब सोच बदलेगी। तब हमें बराबरी पर खड़ा करने के लिएकानून की जरूरत नहीं पड़ेगी।

सोच बदलेगी तब हम कह सकेंगे-

तुम और मैं हैं आधे-आधे, हम दोनों से है पूरी दुनिया
इस दौर में कदम बराबर हैं, जितनी मेरी उतनी तेरी दुनिया

पुरुष और नारी की समानता का लक्ष्य अभी बहुत दूर

इस सोच को बदलने के लिए आर्य समाज को राष्ट्रव्यापी आंदोलन शुरू करना चाहिए

-: प्रीतिश नंदी :-

भारत में एक लड़की का बड़ा होना आसान नहीं है। एक महिला और एक कामकाजी महिला होना और भी कठिन है। कई बार तो ऐसा भी कहा जाता है कि अगर आप पुरुष नहीं हैं तो यह दुनिया की सबसे खतरनाक जगह है। यहां पर लैंगिक विभाजन बहुत अधिक है, हालांकि यह धीरे-धीरे बंद हो सकता है, यह उनके लिए जीवन को अधिक खतरनाक बनाता है, जो जबरन पुरुष विशेषाधिकार के दरवाजे खोलना चाहता है। ऐसे देश में जहां यौन अपराध हर सुबह अखबारों के पहले पेज पर होते हैं, वहां हजारों अनदेखी, अपरिचित महिलाओं ने लैंगिक पूर्वाग्रह और अपमान के साथ रहनासीख लिया है। उन्हें लगता है कि इसके अलावा कोई विकल्प नहीं है। हाल ही में सरकार ने सेना में महिलाओं को अधिक समानता देने वाली याचिका पर सुप्रीम कोर्ट में कहा था कि महिलाएं कमांडिंग पदों के लिए उपयुक्त नहीं हैं, क्योंकि पुरुष सैनिक उन्हें स्वीकार करने को तैयार नहीं हैं। ऐसा बिल्कुल नहीं है। यह भी तर्क दिया गया कि अलग-अलग शारीरिक मानदंडों की वजह से तैनाती के लिए महिला और पुरुष अफसरों को समान नहीं आंका जा सकता। अधिक पारिवारिक जरूरत, युद्धबंदी बनाए जाने का डर और युद्ध की स्थिति में महिला अफसरों पर संदेह जैसे अनेक कारणों से कहा गया कि वे इस कार्य के योग्य नहीं हैं।

सौभाग्य से अदालत ने इन ओछे और लैंगिक भेदभाव वाले तर्कों को खारिज कर दिया और आदेश दिया कि अब पुरुषों की ही तरह महिलाएं भी स्थायी कमीशन पा सकेंगी। जजों ने कहा कि 'लैंगिक आधार पर क्षमताओं पर संदेह करने से न केवल महिला के रूप में बल्कि भारतीय सेना की सदस्य के तौर पर भी उनके आत्मसम्मान का तिरस्कार हुआ है।' उम्मीद है कि इस ऐतिहासिक फैसले से हमारी सेना में महिलाओं की संख्या में मौजूदा चार फीसदी की तुलना में ठीकठाक बढ़ोतरी होगी। इसके अलावा गणतंत्र दिवस परेड में एक शोपीस की तरह प्रोजेक्ट होने की बजाय महिला ऑफिसर्स जल्द ही पुरुषों के समान ही प्रोन्नति, रैंक, लाभ व पेंशन पा सकेंगी। लेकिन, आदमी तो आदमी ही है और वो अपने पूर्वाग्रहों को आसानी से नहीं छोड़ेगा। यही वजह है कि एक वैश्विक शक्ति के दावों के बावजूद हम यूएनडीपी लैंगिक समानता इंडेक्स में 162 देशों में 122वें स्थान पर हैं, चीन, म्यांमार और श्रीलंका भी हमसे आगे हैं।

हम महिलाओं के बारे में क्या सोचते हैं, इसकी वास्तविकता का पता आरएसएस प्रमुख मोहन भागवत के हाल के बयान से पता चलता है। उनका कहना था कि सामान्य तौर पर अधिक तलाक पढ़े-लिखे और संपन्न परिवारों में होते हैं, 'क्योंकि शिक्षा और दौलत से दंब आता है और परिणाम स्वरूप परिवार बंट जाते हैं।' यह मानसिकता बदनी चाहिए। भागवत जिसे संपन्नता कहते हैं वह शिक्षा और वित्तीय स्वतंत्रता असल में महिला के लिए यह संभव बनाती है कि वह उस समाज में बराबरी के दर्जे पर दावा कर सके, जहां हर संबंध में उसे कमतर आंका जाता है, खासकर विवाह में। गरीब और मध्यम वर्ग कीलाखों महिलाएं सामाजिक निंदा के

(शेष पृष्ठ 7 पर)

निर्भया मामले में डेथ वारंट के बावजूद फांसी न होने पर जनविक्षोभ

महर्षि दयानन्द द्वारा सत्यार्थ प्रकाश में वर्णित दण्ड प्रक्रिया अपनाई जाए तो इस प्रकार के घृणित कार्य होने बंद हो जाएं

महर्षि दयानन्द ने सत्यार्थ प्रकाश में लिखा है-

दण्डः शास्ति प्रजाः सर्वा दण्ड एवाभिरक्षति।
दण्डः सुप्तेषु जागर्त्ति दण्डं धर्मं विदुर्बुधाः॥

दण्ड ही प्रजा का शासनकर्त्ता, सब प्रजा का रक्षक, सोते हुए प्रजास्थ मनुष्यों में जागता है, इसीलिये बुद्धिमान् लोग दण्ड ही को 'धर्म' कहते हैं। महर्षि दयानन्द मनुस्मृति के श्लोकों को उद्धृत करते हुए लिखते हैं कि विना दण्ड के सब वर्ण दूषित और सब मर्यादा छिन्न-भिन्न हो जाये। दण्ड के यथावत् न होने से सब लोगों का प्रकोप हो जावे। जहाँ कृष्णवर्ण-रक्तनेत्र भयङ्कर पुरुष के समान पापों का नाश करनेहारा दण्ड विचरता है, वहाँ प्रजा मोह को प्राप्त न होके आनन्दित होती है, परंतु जो दण्ड का चलाने वाला पक्षपातरहित विद्वान् हो तो। जब दण्ड बड़ा तेजोमय है, उसको अविद्वान्, अधर्मात्मा धारण नहीं कर सकता, तब वह दण्ड धर्म से रहित कुटुम्बसहित राजा ही का नाश कर देता है। क्योंकि जो आप्त पुरुषों के सहाय-विद्या-सुशिक्षा से रहित, विषयों में आसक्त मूढ़ है, वह न्याय से दण्ड को चलाने में समर्थ कभी नहीं हो सकता। और जो पवित्र आत्मा, सत्याचार और सत्पुरुषों का सङ्गी, यथावत् नीतिशास्त्र के अनुकूल चलनेहारा, श्रेष्ठ पुरुषों के सहाय से युक्त बुद्धिमान् है, वही न्यायरूपी दण्ड के चलाने में समर्थ होता है।

इसीलिए देश में आवाज उठने लगी है कि कानूनी सुधार हों

निर्भया मामले के बाद महिला सुरक्षा और 2जी घोटाले के बाद भ्रष्टाचार के खिलाफ हुई लामबंदी से यूपीए-2 सरकार का सूपड़ा साफ हो गया था। निर्भया कांड के बाद न्याय प्रणाली दुरुस्त करने की बजाय, सख्त कानूनों का और 2जी जैसे भ्रष्टाचार के मामलों के रोकने के लिए लोकपाल का शॉर्टकट लाया गया। लोकपाल की हालत तो अब जोकपाल सी हो गई है। निर्भया के दोषियों को दंड नहीं मिलने से त्रस्त समाज ने हैदराबाद में रेप कांड के आरोपियों के एनकाउंटर के बाद देशव्यापी जश्न मनाया, जिसे अदालतों के खिलाफ जनता का अविश्वास प्रस्ताव माना जा रहा है। इन दोनों केस स्टडीज से साफ है कि शॉर्टकट चुनावी नारों के दम पर सरकार बनाना आसान है, लेकिन व्यवस्था बदलना बहुत ही कठिन है। निर्भया के दोषियों में से एक नाबालिग की रिहाई पहले ही हो चुकी है। अब दूसरे दोषी को नाबालिग साबित करने के लिए यत्न किया जा रहा है। शराब, ड्रग्स और पोर्नोग्राफी से लैस नाबालिग अब वयस्कों की तरह अपराध में लिप्त हो रहे हैं। अपराध के मूल कारण को दूर किए बगैर सिर्फ कानून की सख्ती से समाज में अनाचार कैसे कम होगा? हैदराबाद में दुष्कर्मियों के पुलिस एनकाउंटर के बाद अब देशभर में आंध्रप्रदेश के दिशा बिल की चर्चा है। इसके तहत सात दिन के भीतर पुलिस जांच और 14 दिन में मुकदमा खत्म करने के लिए कानून बनाने की योजना है। यदि यह बना तो एक मजाक ही साबित होगा, क्योंकि हैदराबाद एनकाउंटर की जांच कर रहे न्यायिक आयोग को सुप्रीम कोर्ट ने ही छह महीने का समय दिया है।

निर्भया मामले में पुलिस ने तीन दिन में दोषियों के खिलाफ आरोप-पत्र दायर कर दिया था। ट्रायल कोर्ट और हाईकोर्ट ने भी मामले को लगभग एक साल में निपटा दिया। लेकिन, सुप्रीम कोर्ट की वजह से यह मामला 6 सालों से लटका है। हाईकोर्ट ने सख्त टिप्पणी करते हुए कहा था कि कई साल की चुप्पी के बाद अब जेल अधिकारी और सरकार मामले को असाधारण तेजी से आगे बढ़ा रहे हैं। केन्द्र सरकार ने सुप्रीम कोर्ट में दो मामले दायर किये हैं, जिसमें दीर्घकालिक न्यायिक सुधारों की बजाय निर्भया मामले में फौरी न्याय की मंशा ज्यादा है। जिन दोषियों ने अपने सारे कानूनी विकल्प खत्म कर दिए, उनके खिलाफ डेथ वॉरंट जारी करने के लिए ट्रायल कोर्ट में अर्जी देने की बजाय, सुप्रीम कोर्ट से नए दिशानिर्देशों की मांग बेतुकी है। संविधान में विशेष मामलों में दया याचिका के लिए राज्यपाल और राष्ट्रपति को विशेषाधिकार दिया गया, जिसे सुप्रीम कोर्ट के फैसले से गुनहगारों का संवैधानिक अधिकार मान लिया गया। कई दशक पुराने प्रिवी काउंसिल के फैसलों को नजीर मानकर आज भी अनेक फैसले होते हैं। दूसरी तरफ, सुप्रीम कोर्ट के नवीनतम फैसलों पर कुछ सालों में सवाल खड़ा होना न्यायिक त्रासदी है। सोशल मीडिया पर दोष मढ़ने की बजाय, आंखों पर पट्टी बांधे महिला यदि दबावों से मुक्त होकर निष्पक्ष फैसले करे तो न्याय की देवी पर जनता का भरोसा फिर कायम होगा।

पुलिस और सरकारी विभागों द्वारा बेवजह की मुकदमेबाजी से आमजनता त्रस्त है। दूसरी ओर सुप्रीम कोर्ट के फैसले के बावजूद बड़े लोगों के खिलाफ कार्रवाई नही होती। 15 साल लम्बी मुकदमेबाजी के बावजूद टेलिकॉम कंपनियों से हजारों करोड़ की वसूली नहीं होने से नाराज सुप्रीम कोर्ट के जज ने यह कह दिया कि फसे के दम पर अदालतों को प्रभावित करना खतरनाक है। रसूखदारों के मामलों में बड़े वकीलों के कानूनी पेंच से टरकाए गए मामलों को न्यायशास्त्र की उपलब्धि से नवाजा जाता है तो अब बीमारी, मनोरोग और नाबालिग जैसे बहानों से निर्भया के दरिंदों की फांसी टलवाने की कोशिशों की ठोस खिलाफत कोई कैसे करे? जज के अनुसार कानूनी विकल्प रहने तक फांसी देना पाप होगा। लेकिन, बेजा मुकदमेबाजी से अदालतों को हलकान करने वालों पर जुर्माना नहीं लगाना तो ज्यादा बड़ा पाप है, जिसकी सजा पूरे समाज को मिलती है।

आजादी के बावजूद दो शताब्दी पुराने ब्रिटिशकालीन साम्राज्यवादी कानूनों पर निर्भरता, डिजिटल इंडिया की राह में सबसे बड़ा रोड़ा है। कानून में बदलाव के लिए बनाए गए विधि आयोग का कार्यकाल अगस्त 2018 में खत्म हो गया और अब दो साल बाद नए विधि आयोग के लिए केन्द्रीय मंत्रिमंडल ने मंजूरी दी है, इससे साफ है, कि दीर्घकालिक कानूनी सुधार, नेताओं और सरकार की प्राथमिकता नहीं है। इंडिया स्पेंड की रिपोर्ट के अनुसार न्यायिक व्यवस्था पर जीडीपी का सिर्फ .08 फीसदी औसतन खर्च हो रहा है। दूसरी तरफ पुलिस पर जीडीपी का 3 से 5 फीसदी और जेलों के सिस्टम पर .2 फीसदी खर्च होता है। इसे अगर इस तरह से समझा जाए कि अदालतों से ढाई गुना ज्यादा खर्च जेलों में बंद कैदियों पर और 62 गुना से ज्यादा पुलिस पर खर्च किया जा रहा है। खर्च के इस तरीके में बदलाव करके, सही तरीके से कानून का शासन लागू हो तो जीडीपी में 9 फीसदी का इजाफा हो सकता है।

तीसरे डेथ वारंटा के अनुसार, 3 मार्च की मुकर्रर तारीख में निर्भया के दरिंदों की फांसी होगी या नहीं, इस पर अभी संशय बरकरार है। वकीलों के साथ अब पेशेवर मुकदमेबाज भी अदालतों के रुख और संभावित परिणामों को पहले ही समझने लगे हैं। इन परिस्थितियों में यह जरूरी हो गया है कि आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के इस्तेमाल से न्यायिक व्यवस्था के विलंब को प्रभावी तरीके से दूर किया जाए। मीडिया के आंदोलनों से निर्भया जैसे मामलों में न्याय की चक्की तेज हो गई है। लेकिन, मुकदमेबाजी में फंसे करोड़ों भारतीयों की जिंदगी अदालतों के चक्कर में बर्बाद हो रही है। अंग्रेजों के समय के भाप के इंजन बंद होने के बाद, अब बुलेट ट्रेन की बात होने लगी है। उसी तर्ज पर अदालतों के दो शताब्दी पुराने भोथरे सिस्टम को बदला जाए तो निर्भया के मां-बाप समेत 25 करोड़ लोगों को जल्द न्याय और 130 करोड़ आबादी को सुकून मिल सकेगा।

पुरुष और नारी...

(पृष्ठ 6 का शेष)

डर से आज भी एक प्रेमहीन व नाखुश विवाह में फंसी हैं। यह खासकर भारत के उन हिस्सों में हो रहा है, जहां पर परंपराएं सुनिश्चित करती हैं कि किससे शादी करनी है यह तय करने में महिलाओं की इच्छा न्यूनतम हो। यह फैसला समुदाय या फिर परिवार के बड़े लोग करते हैं। और इसकी वजह प्रेम के अलावा ही होती है। मान्यता यह है कि प्रेम शादी के बाद होना चाहिए न कि अन्य तरीके से।

यह सच है कि अधिक से अधिक महिलाएं अब खुद का अधिकार जता रही हैं। वे चाहे अपनी पसंद का साथी चुन रही हों जाति, समुदाय, गोत्र या फिर कुछ मामलों में तो लिंग को भी नकार रही हैं। यही नहीं वे शादी जरूरत है इस विचार को भी खारिज कर कर रही हैं। अधिक से अधिक महिलाएं कॅरियर चुन रही हैं, ताकि उनमें एक गर्व की भावना आए। कई अन्य जो ऐसे विवाहों में फंसी हैं, जिसमें वे रहना नहीं चाहती, वे उसे छोड़कर अपनी जिंदगी को नए सिरे से परिभाषित कर रही हैं और वे उस खुशी और समानता को हासिल कर रही हैं, जिससे अब तक उन्हें वंचित किया गया था। उन्हें इस बात का डर नहीं लगता कि समाज उनके बारे में क्या सोचेगा। शिक्षा और वित्तीय स्वतंत्रता ने उन्हें यह चुनने का अधिकार दिया है, दंभ नहीं। यह लैंगिक न्याय की चाहत से आया है।

यह सही है कि परिवार टूट रहे हैं। लेकिन ये इसलिए टूट रहे हैं कि महिलाएं अब उस विवाह को छोड़ने से डर नहीं रही हैं, जो चल नहीं पा रहा है। उनके लिए तलाक स्वतंत्र इच्छा का एक जरिया है। यह एक असंतुष्टि वाली नौकरी छोड़कर दूसरी नौकरी पाने जैसा है, जहां पर आपके सफल होने के अधिक मौके हैं। यह खुद को बचाने की भावना से आता है, दंभ से नहीं। दंभ तो वह है जब पुरुष मासिक धर्म की उम्र वाली महिलाओं को मंदिर में जाने से रोकते हैं। दंभ तब होता है, जब विधवाओं का सामाजिक तिरस्कार होता है। या तब होता है, जब दहेज न लाने पर दुल्हनों को जला दिया जाता है। एक आधुनिक कार्यस्थल पर अवसरों व वेतन में असमानता और महिलाओं के प्रति व्यवहार दंभ है। अमेरिकी फिल्मकार विंसटीन का मामला इसका उदाहरण है।

लैंगिक समानता की लड़ाई जारी रहेगी। असल में तो यह गति पकड़ेगी। पुरुषों को अब समानता की हकीकत में रहना सीखना होगा। परंपराओं को नए सामाजिक बदलावों के बीच से रास्ता निकालकर यह सुनिश्चित करना होगा कि महिलाएं वह सब कुछ कर सकें जो पुरुष कर सकते हैं और वह भी बिना इस डर के कि उनसे पूछताछ होगी या सजा मिलेगी।

पंजीयन संख्या : RAJHIN(RNI)2000/2567
डाक पं. सं. : Jaipur City/264/2018-20

गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर हरिद्वार पर असामाजिक तत्वों का आक्रमण

गुरुकुल बचाओ संघर्ष समिति का गठन

गुरुकुल बचाओ हुंकार रैली को स्वामी आर्यवेश ने सम्बोधित किया

गुरुकुल बचाओ संघर्ष समिति के तत्वावधान में दिनांक 23 फरवरी 2020 को विभिन्न धार्मिक, सामाजिक संस्थाओं तथा संगठनों ने एक विशाल रैली निकाली। यह विशाल रैली गुरुकुल परिसर से लेकर मजिस्ट्रेट कार्यालय तक निकाली गई।

गुरुकुल बचाओ हुकार रैली को सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी, स्वामी यतीश्वरानन्द जी विधायक हरिद्वार, स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती, स्वामी यज्ञमुनि जी, पूर्व गन्ना मंत्री स्वामी ओमवेश जी, पूर्व सांसद प्रोफेसर रासासिंह रावत, पूर्व आईपीएस श्री आनन्द कुमार, आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तराखंड के प्रधान श्री गोविन्द सिंह भण्डारी तथा मंत्री श्री दयाकृष्ण कांडपाल और आर्य समाज के युवा नेता ब्र. दीक्षेन्द्र आर्य आदि अनेक नेताओं ने सम्बोधित किया।

स्वामी आर्यवेश जी ने स्थिति को स्पष्ट करते हुए बताया कि गत कुछ दिनों से कुछ अवांछित तत्व महाविद्यालय भूमि को खुर्द-बुर्द करने की साजिश रच रहे हैं और गुरुकुल महाविद्यालय की भूमि पर कब्जा करने का प्रयास कर रहे हैं। स्वामी आर्यवेश ने कहा कि गुरुकुल महाविद्यालय एक ऐतिहासिक गुरुकुल है। इस गुरुकुल के स्नातकोत्तरों ने अपने बलिदान और समर्पण से महाविद्यालय को यशस्वी बनाया है। गुरुकुल बचाओ संघर्ष समिति का संयोजक स्वामी यज्ञमुनि सरस्वती को बनाया गया।

गुरुकुल का संक्षिप्त जीवन परिचय तथा अपील

पराधीन भारत के संकट को दूर करने के लिए मैकाले की शिक्षा पद्धति को समाप्त करने के लिए आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के परम शिष्य स्वामी दर्शनानन्द सरस्वती जी ने गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर को सन् 1907 में स्थापित कर वैदिक संस्कृति, सभ्यता, आर्ष पद्धति और प्राचीन गुरुकुल प्रणाली को पुनर्जीवित करके भारतीय संस्कृति पर जो उपकार किया है वह अविस्मरणीय है, क्योंकि यहां से भारत को स्वतंत्र कराने की दिशा मिली। यहीं से ही सदाचारी, त्यागी, तपस्वी, राष्ट्रभक्त एवं राजनेता उत्पन्न हुए। स्वामी दर्शनानन्द जी ने अपना सर्वस्व न्यौछावर करके और अपनी झोली फैलाकर आये दान से गुरुकुल प्रणाली को क्रियान्वित और गतिमान करने के लिए अपना जीवन अर्पित कर दिया।

वीतराग पूज्य स्वामी जी ने प्रजा के सात्विक दान से गुरुकुल बदायूं, सिकन्दराबाद, बिलारसी, मुरादनगर, वृन्दावन समेत अनेक गुरुकुलों की स्थापना कर क्रांति मचा दी थी। स्थापना दानदाता सब-इंस्पेक्टर बाबू सीताराम जी (रईस) ने 300 बीघा बहुमूल्य भूमि निःसंकोच स्वामी दर्शनानन्द जी के गुरुकुल महाविद्यालय सभा, ज्वालापुर के नाम कर उदारता का परिचय दिया था।

स्वामी दर्शनानन्द जी जीवन-पर्यन्त अंतिम श्वांस तक राष्ट्र निर्माण में इस गुरुकुल के ब्रह्मचारियों को अर्पित करके राष्ट्र को स्वर्णिम बनाते रहे जिसके परिणामस्वरूप महाविद्यालय से शिक्षित सैकड़ों मूर्धन्य विद्वान् शास्त्रार्थ महारथी, राष्ट्रभक्त, समाजसेवी एवं राजनेता गुरुकुल का नाम रोशन करते रहे जिसमें उल्लेखनीय नाम दर्शनों के मर्मज्ञ राष्ट्रपति द्वारा सम्मानित पं. उदयवीर शास्त्री, डॉ. सूर्यकान्त, आचार्य नन्दकिशोर, पूर्व सांसद कपिलदेव द्विवेदी, पं. प्रकाशवीर शास्त्री, पं. नरदेव जी शास्त्री, स्वामी रामानन्द शास्त्री, पद्मश्री क्षेमचन्द्र सुमन आदि तन-मन-धन से राष्ट्र को समर्पित रहे।

वर्तमान में इस गुरुकुल में सैकड़ों ब्रह्मचारी विद्यार्जन कर रहे हैं। शिक्षा व्यवस्था के दृष्टिकोण से इस महाविद्यालय में संस्कृत विभाग, गुरुकुल विभाग, स्नातकोत्तर, योगाचार्य एवं योग डिप्लोमा। संस्कृत विभाग में प्रथमा से लेकर आचार्य पर्यंत एवं माध्यमिक विद्यालय में कक्षा-6 से कक्षा-10 तक की शिक्षा दी जा रही है। संस्था विश्वविख्यात गुरुकुल फार्मेसी एवं चिकित्सालय का भी संचालन बड़ी सुगमता से कर रही है। महाविद्यालय की गरिमामयी ख्याति से प्रभावित होकर भारत के प्रथम राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्र प्रसाद, महात्मा गाँधी, बाबू जगजीवन राम, पं: जवाहरलाल नेहरू, श्री मोरारजी देसाई, चौ. चरण सिंह, श्री चन्द्रशेखर, श्री लाल बहादुर शास्त्री एवं लाला लाजपत राय, श्री वी. सत्य नारायण रेड्डी, पं. गोविन्द बल्लभ पंत, पं. मोतीलाल नेहरू, महात्मा मुंशीराम आदि गणमान्य नेताओं ने अपने दान की आहुति करके गुरुकुल शिक्षा को राष्ट्र उन्नति का आधार स्वीकार कर प्रशंसा की थी। विश्वविख्यात नामी गिरामी हस्तियाँ गुरुकुल में आने के लिए स्वामी दर्शनानन्द जी से समय-समय पर सम्पर्क के लिए आतुर रहती थीं।

किन्तु आज उस महान तपस्थली एवं दर्शनीय गुरुकुल की पुण्य भूमि एवं आश्रमों की भूमि को अवांछनीय लोग कब्जा करना चाहते हैं। गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर पर कब्जा करके अपना स्वार्थ सिद्ध करना चाहते हैं और गुरुकुल की भूमि पर काम्पलेक्स अपार्टमेंट, वैंकटहॉल एवं होटल आदि बनाकर गुरुल को बन्द करने के यत्न में बार-बार गुरुकुल पर कब्जे का प्रयास कर रहे हैं जिसके कारण गुरुकुल का शैक्षणिक कार्य बाधित हो रहा है। यह लोग परिसर में जबरन घुसकर धुम्रपान एवं अन्य मादक पदार्थों का सेवन करके गुरुकुल की पवित्रता को भी नष्ट कर रहे हैं जिसका दुष्प्रभाव विद्यार्थियों पर निरन्तर पड़ रहा है।

हम आर्य समाज के योगी, संन्यासी, समाजसेवी जन उत्तराखण्ड की सरकार से अपील करते हैं कि दिनांक 5 फरवरी, 2020 को गुरुकुल के कार्यालय तथा भवनों के ताले तोड़कर गुरुकुल की अस्मिता को ठेस पहुंचाया गया साथ ही अति प्राचीन यादगार वस्तुओं एवं अभिलेखों को भी गाड़ियों में भरकर चुरा ले गये। ऐसे अपराधियों के विरुद्ध तत्काल प्रभाव से कार्यवाही होनी चाहिए तथा इसकी सी.बी.आई. जांच अविलम्ब करानी चाहिए।

॥ ओ३म् ॥
आर्य नीति

सत्यव्रत सामवेदी, सम्पादक, प्रकाशक एवं मुद्रक 5च-13, जवाहर नगर, जयपुर के लिये हरिहर प्रिन्टर्स, आदर्श नगर, जयपुर से मुद्रित।

सम्पादक मण्डल
घनश्यामधर त्रिपाठी
फोन नं. : 0141-2621859 का. : 2624951
M : 9829052697, e-mail: Vishwamaryam@gmail.com
9929804883 Vishwamaryam@rediffmail.com

आर्य समाज, विद्या समिति एवं शिक्षा समिति, आदर्श नगर, जयपुर के सौजन्य से प्रकाशित

-:: डाक वापसी का पता ::-
आर्य नीति, आर्य समाज, आदर्श नगर, जयपुर-4, राज.

प्रेषक : सत्यव्रत सामवेदी, सम्पादक, आर्य नीति
आर्य समाज, राजापार्क, जयपुर - 4
राजस्थान

डाक टिकट

पंजियन संख्या
RAJHIN(RNI)/2000/2567
डाक पंजीयन संख्या
Jaipur City/264/2018-20

प्रेषित :
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
आर्य समाज मंदिर, 15, हनुमान रोड़,
नई दिल्ली-110001